ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(10): 542-543
www.allresearchjournal.com
Received: 24-08-2020
Accepted: 28-09-2020

डॉ0 मृदुला रानी
गृह विज्ञान विभाग, एम0 एस0 आर0 डी0 एस0 कॉलेज, इस्माईलपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 मृदुला रानी
गृह विज्ञान विभाग, एम0 एस0 आर0 डी0 एस0 कॉलेज, इस्माईलपुर, बिहार, भारत

महिलाओं एवं बच्चों के लिए कल्याणकारी योजना

डॉ0 मृदुला रानी

प्रस्तावनाः

यह आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ता द्वारा दी जाने वाली एक महत्वपूर्ण सेवा है। यह विषेष रूप से 15–45 साल की महिलाओं की क्षमता के विकास की दिषा में लम्बी अवधि का लक्ष्य है ताकि वे अपने, अपने बच्चों की तथा परिवार के स्वास्थ्य और पोषण संबंधी अवष्यकताओं की स्वयं देख–भाल कर सकें। इस समूह की सभी महिलाओं को इस घटक के द्वारा कवर किया जाता है।

स्वास्थ्य और पोषाहार षिक्षा की विषय–सूची में बच्चों की देख–भाल षिषु के भोजन की आदतों, टीकाकरण, स्वास्थ्य सेवाओं का उपयोग, परिवार को सीमित रखने और पर्यावरण की सफाई से संबंधित तथ्य और पोषाहार षिक्षाओं, गृह–भ्रमण या निर्देषन के द्वारा दी जाती हैं। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता पोषण एवं स्वास्थ्य के लिए टीका लगाने के लिए निर्धारित दिन वृद्धि निगरानी दिवस, माता/महिला मंडल की बैठकों, समुदाय तथा घरों के दौरे, गॉव में सम्पर्क अभियान और अन्य महिला समूहों की बैठक, स्थानीय मेले, त्योहार आदि अवसारों का उपयोग करती है। स्वास्थ्य तथा पोषाहार षिक्षा द्वारा गर्भवती तथा दूध पिलानेवाली माताओं सहित सभी महिलाओं तक पहॅचाने के प्रयास किये जा रहे हैं ताकि घरेलु और सामुदायिक स्तर पर गर्भवती महिलाओं व बच्चों को प्रोत्साहन दिया जा सके। प्रसव पूर्व देख–भाल, माताओं के पोषण, चार से छः माह के बच्चों को केवल मॉ का दूध पिलाने, समय पर टीकाकरण तथा उसके बाद मॉ के दूध के साथ सॉि उपरी आहार षुरू करने की रोकथाम में मदद मिलती है।

महिलाओं को अपने व अपने बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण एवं विकास के लिए प्रेरित करना समेकित बाल विकास सेवा का प्रमुख सिद्धांत है। महिलाओं व बालिकाओं के लिए पीढ़ी–दर–पीढ़ी कुपोषण के चक्र को तोड़ना एक चुनौती बनी हुई है।

हाल में षुरू की गई इंदिरा महिला योजना के साथ ही महिलाओं को अधिकार देने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने के लिए इस योजना के लिए नई सम्भावनाऍ आ रही है। इंदिरा महिला योजना के तीन अवयव हैः– अन्तर क्षेत्रीय सेवाओं का अभिसारण, जागरूकता पैदा करना और आय बढ़ाने सम्बन्धी गतिविधियॉ। ऑगनबाड़ी केन्द्र स्तर पर एक जैसी महिलाओं समूहों का गठन किया गया है। महिला योजना के संसाधनों तक सीधी पहुॅच के जरिये महिला समूहों की महसूस की गई आवष्यकताअें की पूर्ति के लिए गतिविधियॉ संचालित करती है। यह योजना अनौपचारिक षिक्षा, प्रषिक्षण, परिवार कल्याण एवं न्यूनतम आवष्यकता कार्यक्रम सहित सभी क्षेत्रीय कार्यक्रमों को सहायता प्रदान करती है।

महिला योजना आई0 सी0 डी0 एस0 के इलाकों में ये बालिका मंडलों में किषोरियों की अधिक भागीदारी के लिए सही वातावरण तैयार करने में भी मदद करती है। कुछ राज्यों जैसे–केरल, तमिलनाडु, राजस्थान आदि में महिलाओं के समूहों को प्रषिक्षण, अनुषिक्षण की दिषा में पहल की है। यह आई0 सी0 डी0 एस0 कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण तत्व बन रहा है।

समुदाय आधारित नवीन एवं स्थाई दृष्टिकोण की पहचान के लिए आई0 सी0 एस0 में काफी वृद्धि हुई है। कुछ राज्यों, जैसे मध्यप्रदेष एवं राजहस्थान में, विभिन्न प्रकार के समुदाय आधारित ढ़ॉचों यथा एन0 जी0 ओ0, महिला मंडल/अन्य महिला समूह, पंचायती राज संस्थान के इस्तेमाल से प्रदर्षन मॉडल विकसित किये जा रहे हैं। समुदाय समूहों के साथ विचार–विमर्ष करके परियोजना/कार्य योजनाऍ विकसित की जा रही है। अन्य उमरतें सहायक ढ़ॉचों में युवा क्लब, उत्तर प्रदेष में नेहरू युवक केन्द्र, कर्नाटक में सम्पूर्ण साक्षरता अभियान और डब्लू डी0 पी0, महिला समाख्या, डी0 डब्लू0 सी0 आर0 जैसे कार्यक्रमों के महिला समूह षामिल है।

अंग्रेजी में एक उक्ति है जिसका सारतत्व है यदि हम किसी पुरूष को षिक्षित, जागरूक और चेतनषील बनाते हैं, तो एक व्यक्ति षिक्षित होता है। यदि हम एक महिला को प्रक्षित, जागरूक और चेतनषील बनाते हैं तो न केवल वह महिला षिक्षित होतही है,

बल्कि पूरा परिवार और भावी पीढ़ी को भी षिक्षित, जागरूक और चेतनषील बनाते हैं। इसी संदर्भ में षहरी प्रखण्ड में भी 15 से 45 वर्ष के उम्र की महिलाओं एवं किषोरियों के बीच षिक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता वृद्धि के लिए किये गए प्रयासों की विवेचना होनी चाहिए। वास्तव में सम्पूर्ण बाल विकास परियोजना की सफलता की माप का आधा रचह नहीं है कि कितनी मात्रा में पोषाहार का वितरण हुआ या कितनी दवाएँ विरित की गयी या टीकारकरण अभ्यिान कितना सफल हुआ बल्कि सफलता की माप यह है कि गरीबी की रेखा के नीचे जीनेवाली पिछडे एवं हरिजन वर्ग की महिलाएँ अपनी तथा अपने बच्चे के स्वास्थ्य के प्रति कितनी जागरूक हो सकी। बाल विकास योजना के अन्तर्गत विभिन्न प्रावधानों के प्रति उनमें कितनी चेतना आई? क्योकि षिक्षित और सजग महिला वर्ग के बीच आंगनबाड़ी सेविका और स्वास्थ्य कार्यकर्ता अपने दायित्वों प्रति लापरवाह नहीं हो सकते। अनियमितता और भ्रष्टाचार की मात्रा भी घट जायेगी। महिला एवं किषोरियों के बीच बढ़ती जागरूकता और चेतना हीं सही अर्थ में बाल विकास परियोजना की सफलता का मापदण्ड है।

संदर्भ–सेकेत

1. संयुक्त राष्ट्र बालकोष द्वारा प्रकाषितः दुनिया के बच्चों की स्थिति; 1998, पृष्ट–43
2. गवरमेन्ट ऑफ इण्डिया डिपार्टमेंट ऑफ वोमेन एण्ड चाइल्ड डेवलपमेंटः इन्टीग्रेटेड चाईल्ड सर्विसेज, पृष्ट–14